विषय प्रवेश

मानव जैसे संवेदनशील जीव के लिए संगीत का अनन्यसाधारण महत्त्व प्रतीत होना स्वाभाविक है। ठीक इसी तरह मुझे भी संगीत की रुची थी और इस अभिलाषा का मेरे पूजनीय पिताजी ने समर्थन किया। संगीत अर्थात् गायन, वादन, नृत्य में से क्या सीखा जाएँ, यह सवाल मुझसे पूछा गया, तब मैंने तबला वाद्य चुना। इसका कारण यह था कि तबला वाद्य स्वतंत्र वादन एवं साथसंगत दोनों में प्रचलित एवं आवश्यक था। इसी प्रकार मेरा सांगीतिक जीवन प्रवास शुरू हुआ। इस शिक्षा के पथ पर गुरूवर्य पं. नारायण जोशी जी जैसे महान विभूति से मार्गदर्शन प्राप्त होकर तबला विषय में मेरी रुची दिन-ब-दिन बढ़ती गई। युवा उम्र की निर्धारित मानसिकता ने तबला के फर्रुखाबाद घराने की उच्चतम तालिम के साथ इस विषय में सर्वोत्तम पदवी प्राप्त करने की आस मेरे मन में जागृत की। उस जमाने में व्यवहारिक रूप में एक तबलावादिका ने तबला विषय में करिअर करना प्रवाह के विरूद्ध माना जाता था। लेकिन यह विचार जब मैंने माता-पिता एवं गुरूजनों को कथन किया, तब उन्होंने अपनी उन्नतिशील विचारधारा से मुझे आशीर्वाद दिया। यह ध्येय मेरे लिए तथा मेरे माता-पिता के लिए इतना महत्त्वपूर्ण था कि तबला वादन मेरे जीवन की आधारशीला बनी। मेरी उच्च शिक्षा का ध्येय मैं पूर्ण करूँ, ये मेरे स्वर्गीय पिताजी की आखरी आकांक्षा थी। इस लक्ष्य पर पहुँचने का रास्ता कठिनाइयों से परिबद्ध था, किन्तु मेरा निश्चय उन कठिनाईयों से भी दृढ था। तत्पश्चात् पदव्युत्तर शिक्षा पूरी करके मैंने मेरे ध्येय तक जाने का रास्ता खुद ही निर्माण किया।

तबला विषय में पी. एच. डी. पदवी प्राप्त करने हेतु मैंने अनेक विद्यापीठों का अन्वेषण किया और इनमें से बरोडा की प्रख्यात 'द महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी' के विकल्प का चयन किया। पं. आमोद दंडगे सर जी के अमूल्य सहयोग से प्रो. डॉ. अजय अष्टपुत्रे सर जी जैसे दिग्गज कलाकार एवं आदर्श प्राध्यापक, मार्गदर्शक के रूप में पाने का सौभाग्य मुझे मिला। युनिवर्सिटी की प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण कर मैंने पी. एच्. डी. की सफर शुरू की। प्रो. डॉ. अजय अष्टपुत्रे सर जी के मार्गदर्शन से अनेक विषयों पर विचार-विमर्श कर शोधप्रबंध के लिए 'गत' विषय चुना। स्वतंत्र

तबलावादन के उत्तरांग में बजनेवाले इस सुंदर काव्याविष्कार पर पूर्वकाल में विस्तृत लेखन कम हुआ था। स्वतंत्र तबलावादन की सभी विस्तारक्षम एवं पूर्वसंकल्पित रचनाओं से सम्बन्ध दर्शानेवाली गतों के बारे में मन में अनेक प्रश्न थे, इनके जवाब प्राप्त कर समस्याओं का यथार्थ निराकण ढूँढने की आवश्यकता थी। प्रकृति की गतिमानता, रचनाकारों की प्रतिभा, लयबंध, गतों के प्रकार एवं निहित सौंदर्यतत्त्व इन्हें विविध घरानों की गतों के उदाहरणों द्वारा उद्घाटित करने की जरूरत ने मुझे इस विषय की ओर खींच लिया। इसी कारण मैंने 'स्वतंत्र तबलावादन में गत एवं उनके प्रकारों का सौंदर्यात्मक विवेचन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' यह शोधप्रबंध का विषय तथा सुयोग्य शीर्षक सुनिश्चित कर लिखना प्रारम्भ किया। शोधप्रबंध लिखते समय मार्गदर्शक प्रो. डॉ. अजय अष्टपुत्रे सर जी का संपूर्ण सहयोग मिला। इस विषय पर अध्ययन कर इसे प्रबंध स्वरूप लिखने के लिए काफी ज्ञानवर्धन होना जरूरी था। इस ज्ञानसागर के विद्वान गुणिजनों का सहयोग प्रबंधपूर्ति के लिए अनिवार्य था।

शोधप्रबंध लिखते समय अनेक तबला संबंधी हस्तियों के साथ साक्षात्कार करने का अवसर प्राप्त हुआ, जिससे ज्ञान की अभिवृद्धि हुई। 'गत' यह केवल विषय ही नहीं बल्कि एक प्रकार की सांगीतिक सोच है, इसका मुझे आकलन हुआ। मार्गदर्शक प्रो. डॉ. अजय अष्टपुत्रे सर के साथ-साथ तबला विभाग प्रमुख प्रो. डॉ. गौरांग भावसार सर, प्रो. डॉ. केदार मुकादम सर तथा सभी प्राध्यापकों के सहयोग बिना यह शोधकार्य मुमकिन नहीं था। इन सभी को मैं नम्रतापूर्वक धन्यवाद देती हूँ। इसके अलावा ऐसे अनेक दिग्गज जिनसे प्रत्यक्ष रूप में मुलाकात नहीं हो पाई, उन दिग्गजों के ग्रंथों द्वारा बहुत मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

इस शोधकार्य से तबले के विद्यार्थियों को गत रचना का स्वरूप समझना आसान होगा । शोधप्रबंध के विषय को ध्यान में रखकर इसकी मर्यादा में ही शोधकार्य किया गया है। भविष्य में अगर किसी शोधार्थी को इस विषय में और भी कुछ तथ्य दिखाई देते हैं, तो इसके बाद भी कई सारे काम एवं विचारद्वार खुल सकते हैं। इस विषय पर नई शाखाएँ खुल कर और भी शोधकार्य किया जा

सकता है। खुशी की बात यह है कि इस विषय को आगे बढ़ाने में मेरा शोधप्रबंध सहाय्यभूत हो। इस शोधप्रबंध में किया हुआ गतों का एकत्रित संकलन संगीत शिक्षण संस्थाओं के प्राध्यापक तथा विद्यार्थियों के लिए लाभदायी एवं बन्दिशों को अच्छी तरह से समझने में सहाय्यभूत हो सकें, यह मेरा प्रयास है। इस शोधप्रबंध में वर्णित विरामस्थान, सौंदर्यस्थान, ऱ्हस्व-दीर्घ, निकास ये पहलू महफिल में पेश करनेवाले तबलावादकों को अपने प्रस्तुतिकरण में उपयुक्त हो सकें, यह मेरी आशा है। इसी प्रकार भविष्य में इस शोधप्रबंध का लाभ पूरा संगीत समाज याने संगीत शिक्षण संस्था, विद्यार्थी, शोधार्थी, अध्यापक, प्राध्यापक, परफॉर्मिंग आर्टिस्टस् क्रियात्मक एवं सैद्धांतिक अभ्यास के लिए उठा सकें, इसीलिए ऐसा निष्ठापूर्वक प्रयास मैंने किया है।